Dr Kumari Manju
H.O.D. Economics
R.N.C.

Topic
Effects of Taxation
करारोपण के प्रभाव

करारोपण के प्रभावों का अध्ययन तीन शीर्षकों में विभाजित करके किया जा सकता है — (1) उत्पादन पर प्रभाव (2) वितरण पर करारोपण का प्रभाव तथा (3) करारोपण के अन्य प्रभाव।

(1) उत्पादन पर प्रभाव : डाल्टन ने इसके प्रभावों को तीन भागों में विभाजित करके अध्ययन करने की दृष्टि को अपनाया :

(1) कार्य करने और बचत करने की योग्यता पर प्रभाव (Effects on ablity to work and Save) : (a) करारोपण का अर्थ यह है कि व्यक्तिगत लोगों से सरकार की ओर क्रय-शक्ति का अंतरण। इसका स्पष्ट अर्थ है कि करारोपण के फलस्वरूप जनता की क्रय शक्ति में कमी होती है। तो इतना अवश्य है कि धनी वर्ग के पास अतिरिक्त क्रय शक्ति होने से, उनके कार्य करने की योग्यता पर करारोपण से क्रय शक्ति में होने वाली कमी का प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन निर्धन वर्ग पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। निर्धन वर्ग की आय पर या उनके द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं पर कर लगाने से उनकी कुछ आय कम हो जाती है जिससे विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग घट जाता है, स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और अन्त में कार्य करने की शक्ति में कमी हो जाती है।

(b) यदि कर विलासिता या आरामदायक वस्तुओं पर लगाये जाते हैं, तो उनका कार्य करने की शक्ति पर इतना प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता, जितना प्रतिकूल प्रभाव जीवन-रक्षक, कुशलता रक्षक या आवश्यकता की वस्तुओं पर कर लगाने का प्रभाव पड़ता है।

(c) यदि ऐसी वस्तुओं पर कर लगाया जाता है जिनके उपभोग से शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को हानि होती है, जैसे- शराब, भांग इत्यादि, तो ऐसी दशा में कार्य-कुशलता तथा कार्य करने की योग्यता पर अनुकूल प्रभाव पड़ने की संभावना रहती है।

(d) लगभग सभी प्रकार के करों का बचत करने की योग्यता पर कुछ प्रभाव पड़ता है। कर देने के पश्चात आय की मात्रा घट जाती है और आय के उस भाग में से जिसकी बचत की जाती है, कुछ भाग सरकार कर के रूप में ले लेती है जिससे बचत की योग्यता कम हो जाती है, लेकिन जब कर बहुत ही निर्धन लोगों पर, जिनके पास बचाने के लिए शेष ही नहीं होता, लगाया जाता है, तो चाहे वह आय पर हो या उपभोग पर, उनकी बचत शक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि लोगों में यहाँ बचत करने की योग्यता ही नहीं होती।

(2) कार्य करने पर तथा बचत करने की इच्छा पर प्रभाव : इसे दो घटकों के द्वारा अध्ययन किया जा सकता है - (a) करदाताओं की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया तथा (b) करों की प्रकृति या दर।

(a) करदाताओं की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया : करदाताओं की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया को प्रभावित करने वाला मुख्य घटक यह है कि उनकी आय की मांग किस प्रकार की है। आय की मांग की लोच निम्न तीन प्रकार की होती है —

(i) आय की बेलोचदार मांग :- आय की बेलोच मांग का अर्थ यह है कि व्यक्ति आय की एक निश्चित राशि हमेशा प्राप्त करना चाहता है। ऐसे व्यक्तियों पर करारोपण का विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति अपने जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए 500 रु० मासिक अर्जित करने का प्रयास करेगा, क्योंकि विद्यमान जीवन स्तर के लिए उसकी 500 रु० की बेलोचदार मांग है। अतः करारोपण से 100 रु० अतिरिक्त अर्जित करने के लिए करदाता की कार्य करने की इच्छा में वृद्धि होगी।

(ii) आय की लोचदार मांग : आय की लोचदार मांग उस स्थिति को कहते हैं, जिसमें करदाता के मन में प्रत्येक स्थिति में एक निश्चित आय बनाये रखने की लालसा नहीं होती। यदि कर लगाने के कारण उसकी शुद्ध आय में कमी होती है तो वह अनेक बार सोचता है कि आय में कमी पूर्ति के लिए अधिक कार्य-

Scanned with CamScanner

करें या न करें। उदाहरणार्थ कर से पूर्व एक व्यक्ति की कुल आय 10,000 रु० है। अब यदि उस पर 1000 रु० कर लगा दिया जाय तो शुद्ध 9000 रु० रह जायेगी आय की लोचदार माँग होने की स्थिति में वह यह सोच सकता है कि 9,000 रु० से ही काम चला लेगा ऐसी स्थिति में करारोपण के कारण उसकी कार्य करने की इच्छा में वृद्धि नहीं होगी।

(iii) ~~आय की माँग लोचदार~~ लोच इकाई के बराबर: आय की माँग लोच इकाई के बराबर होने का अर्थ है कि कर लगे या न लगे, व्यक्तियों में कार्य करने और बचत करने की इच्छा बराबर बनी रहे समाज में अधिकांश व्यक्तियों की स्थिति यही होती है इसके दो कारण हैं — (1) प्रथम व्यक्तियों में कार्य करने और बचत करने की आदत पड़ जाती है। चाहे कर की दर कितनी ही अधिक क्यों न हो, वे एक निश्चित गति से कार्य और बचत करते हैं। द्वितीय अधिकांश व्यक्तियों में जन्मजात प्रतियोगिता की भावना होती है और प्रत्येक व्यक्ति आय और धन में दूसरे से आगे बढ़ना चाहता है।

व्यवहारिक रूप से अधिकांश करदाताओं की आय की माँग बेलोचदार होती है। ~~कर आदि हो जाते हैं और उसे निरंतर बनाये रखने का प्रयास करते हैं।~~ बेलोचदार करारोपण का कार्य करने की इच्छा पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। अधिकांश व्यक्तियों की आय बेलोचदार होती है। इसके बेलोच होने के निम्न कारण हैं:

(i) निश्चित रहन सहन का स्तर — समाज के अधिकांश व्यक्ति एक निश्चित जीवन स्तर व्यतीत करने के आदि हो जाते हैं और वह निरंतर बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

(ii) परिवार के लिए सम्पत्ति छोड़ने की भावना: प्रत्येक व्यक्ति की यह भावना होती है कि वे पर्याप्त काम और बचत करके पर्याप्त सम्पत्ति अर्जित करें, जिससे परिवार की रक्षा हो और सम्पन्न बना रहे तथा अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्याप्त धन छोड़ सकें।

(iii) सामाजिक प्रतिष्ठा की भावना: प्रत्येक व्यक्ति में यह भावना निहित रहती है कि समाज में उनकी प्रतिष्ठा बनी रहे। इसके लिए एक साधन के रूप में वे अधिक काम और बचत करके अधिक से अधिक धनी बनना चाहता है।

इसके कुछ अन्य मनोवैज्ञानिक कारण भी हैं, जो व्यक्ति की कार्य करने और बचत करने की इच्छा को प्रभावित कर सकते हैं वे निम्न प्रकार हैं — (1) अल्पकाल के लिए लगाए गए करों के कार्य और बचत की इच्छा पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि यदि लोग यह समझते हैं कि कुछ समय के बाद यह कर समाप्त हो जायेगा, (2) यदि ये कर युद्ध काल में कर लगाये जाते हैं, तो उनका भी विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि युद्ध काल के समय राष्ट्रीयता उत्पन्न लोगों में आशा की भावना होती है, (3) युद्ध काल के समय राष्ट्रीय भावना के कारण करारोपण का जनता की कार्य करने की इच्छा पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। (4) मन्दी काल में कर की थोड़ी सी मात्रा कार्य करने और बचत करने की इच्छा को विपरीत रूप से प्रभावित कर सकती है।

(2) करों की प्रकृति: करों की प्रकृति का भी काम करने की इच्छा पर प्रभाव पड़ता है जो निम्न हैं: (1) आकस्मिक या असाधारण लाभों पर कर लगाने वाले करों का कार्य करने की इच्छा पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। इन करों के असाधारण परिस्थितियों से होने वाले विशेष वृद्धियों पर कर, लाभों पर कर, उत्तराधिकार कर, मूल्य वृद्धि लाभों पर लगाए जाने वाले कर, लॉटरी से आय इत्यादि मुख्य हैं। (ii) एकाधिकारी लाभों पर लगाए जाने वाले कर, एकाधिकारी अपने उत्पादन की एक बिन्दु का प्रभाव भी तटस्थ रहता है क्योंकि एकाधिकारी उस बिन्दु पर उत्पादन समायोजित करता है जिस बिन्दु पर उसे सर्वाधिक लाभ होता है।

(iii) सामान्यतः प्रत्यक्ष करों के कार्य करने एवं बचत करने की इच्छा पर विपरीत प्रभाव पड़ता है लेकिन अप्रत्यक्ष करों का कार्य करने की इच्छा पर विपरीत प्रभाव बहुत कम पड़ता है। (iv) व्यय कर का कार्य करने एवं बचत करने की इच्छा पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

Scanned with CamScanner

(i) करों की दरें जितनी अधिक प्रगतिशील होती हैं, कार्य करने की इच्छा पर उतना ही अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(iii) आर्थिक साधनों के स्थानान्तरण पर प्रभाव (Effects on the transfer of economic Resources): करों के फलस्वरूप आर्थिक साधनों का Transfer निम्न प्रकार हो सकता है: (1) लाभदायक स्थानान्तरण: यदि उपभोग की दृष्टि से हानिकारक तथा विलासिता की वस्तुओं पर अधिक कर लगाए जाते हैं, तो इन उद्योगों में लगे साधन उपभोग की दृष्टि से आवश्यक और आरामदायक उद्योगों की ओर प्रवाहित होंगे और यह भरण एक लाभदायक भरण होगा।

(2) अनिवार्य स्थानान्तरण: यदि सामान्य उपभोग और अनिवार्य आवश्यकता की वस्तुओं पर कर लगाए जाते हैं, तो इससे एक ओर तो इन वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होने से इनके उपभोग में कमी आयेगी, जिसका प्रतिकूल प्रभाव उत्पादन क्षमता पर पड़ेगा। दूसरी ओर इन वस्तुओं के उत्पादन में लाभ कम होने पर उत्पत्ति साधन विलासिता की वस्तुओं के उत्पादन की ओर आकर्षित होने लगेंगे। इसके अतिरिक्त यदि करारोपण द्वारा गलत उद्योगों को संरक्षण अनावश्यक रूप से कम उपयोगी और ... किया जाता है तो इससे भी उत्पत्ति के साधनों का अनार्थिक भरण होगा।

(3) वर्तमान उपयोगों से भावी उपयोगों को स्थानान्तरण: यदि उपभोग पर कर लगाए जाते हैं तो बचतों को प्रोत्साहित किया जाता है तो उत्पत्ति के साधनों का भरण वर्तमान उपभोग से भावी उपभोगों की ओर होने लगता है। प्राय: विकास की प्रारंभिक अवस्था या क्रियान्वयन काल में ऐसा भरण किया जाता है।

(11) वितरण पर करारोपण के प्रभाव (Effects of Taxation on Distribution)

वितरण पर करारोपण का प्रभाव दो बातों से प्रभावित होती है – (1) करों की प्रकृति या दरें, तथा करों के प्रकार।

(1) करों की प्रकृति या कर की दरें: करों की प्रकृति का अर्थ है कि समाज के विभिन्न वर्गों पर कर का भार किस अनुपात में पड़ रहा है। इस दृष्टि से कर तीन प्रकार के होते हैं – (a) प्रगतिशील, (b) आनुपातिक कर एवं (c) अवरोही कर। यदि करों की प्रकृति प्रगतिशील है, अर्थात करों की दरें बढ़ती जाती हैं आय एवं सम्पत्ति में वृद्धि होने पर, तो आय एवं सम्पत्ति के वितरण में असमानता कम होगी। यदि करों की प्रकृति आनुपातिक (Proportional) होगी, तो आय एवं सम्पत्ति में वृद्धि होने पर करों की दरें घटने लगती हैं, तो आय एवं सम्पत्ति के वितरण में असमानताएँ बढ़ने लगती हैं।

(2) करों के प्रकार: यहाँ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों का उल्लेख किया जाता है। आय एवं सम्पत्ति के वितरण में असमानताओं को कम करने के लिए सामान्यतः प्रगतिशील प्रत्यक्ष करों का प्रयोग किया जाता है। अप्रत्यक्ष करों के संदर्भ में, उपयोग पर कराधेय वस्तुओं की दृष्टि से सामान्यतः यह आनुपातिक रूप में लगाए जाते हैं और करारोपित वस्तु को आवश्यक वस्तुओं पर अधिक कर लगाए जाते हैं तो अवरोही सिद्ध हो सकते हैं। यदि ये कर विलासिता की वस्तुओं पर प्रगतिशील या अवरोही सिद्ध होते हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि आय एवं सम्पत्ति के वितरण की असमानताओं को कम करने में विशेष अप्रत्यक्ष करों का प्रभाव नहीं पड़ता।

(3) करारोपण के अन्य प्रभाव:

(1) करारोपण और आर्थिक स्थायित्व: आर्थिक स्थायित्व बनाए रखने की दृष्टि से करों की भिन्न भूमिका रहती है, जिनको निम्न प्रकार से स्पष्ट मुद्रा स्फीति और मंदीकाल में किया जा सकता है।

(a) करारोपण और मुद्रा प्रसार: मुद्रा प्रसार में मूल्य-स्तर में वृद्धि होती है। इसका कारण यह होता है कि जनता के हाथों में मुद्रा के रूप में क्रय-शक्ति अधिक होती है जिससे वस्तुओं की माँग बढ़ जाती है लेकिन इस माँग के अनुरूप उत्पादन में वृद्धि नहीं होने से मुद्रा स्फीति की स्थिति बन जाती है। इस परिस्थिति में आवश्यकता इस बात की होती है कि जनता के हाथों से विद्यमान क्रय या व्यय शक्ति को कम ... करों की दरों को बढ़ाया जा सकता है या नए कर ... इसके लिए ...

Scanned with CamScanner

खिंचाए जा सकते हैं। जिससे जनता के हाथों की अतिरिक्त क्रय-शक्ति सरकार को हस्तांतरित हो सके और मुद्रा स्फीतिक प्रवृत्ति को नियंत्रित किया जा सके।

(5) करारोपण और मंदीकाल: मंदी काल में करों को अलग-अलग भूमिका निभानी पड़ती है। इस काल में करों की दरों को बढ़ाना या नए करों को लगाना अच्छा नहीं समझा जाता क्योंकि इससे उपभोग और विनियोग की मात्रा में कमी आ सकती है। मंदी काल में निर्धन व्यक्ति पर पड़ने वाले कर-भारों को कम करना होता है, जिससे देश में उपभोग की प्रवृत्ति बढ़ सके। इसके अतिरिक्त संचयी बचतों को हतोत्साहित किया जाता है तथा बचतों के विनियोग को प्रेरित किया जाता है।

(2) उपभोग पर प्रभाव: सामान्यतः करारोपण से उपभोग के कम होने की प्रवृत्ति होती है। प्रत्यक्ष करों से आय या सम्पत्ति में कमी होने से उपभोग कम होता है और अप्रत्यक्ष करों से वस्तुओं के मूल्य बढ़ने से उपभोग कम हो जाता है।

(3) रोजगार पर प्रभाव: सामान्यतः यह सोचा जाता है कि करारोपण का रोजगार पर विपरीत प्रभाव पड़ना चाहिए, क्योंकि कर लगाने से जनता की आय एवं बचत कम होती है, जिससे विनियोग के लिए प्रेरणा कम होती है लेकिन व्यावहारिकता में यह संभावना विवेकपूर्ण कर-प्रणाली होने पर नहीं होती। यदि सरकार करारोपण द्वारा उत्पादन वृद्धि करने तथा आय और सम्पत्ति में वितरण की असमानताओं को कम करने में सफल हो जाती है तो रोजगार पर उसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसके साथ यह ध्यान रहे कि करारोपण के फलस्वरूप जनता की शुद्ध आय तथा बचत भले ही कम हो जाए लेकिन समाज की कुल शुद्ध आय और बचत में कमी नहीं होती। अनेक दशाओं में देखा गया है कि जनता के पास पड़ी अप्रयुक्त बचत करारोपण के रूप में सरकार के पास पहुँचने पर उत्पादक कार्यों में प्रयुक्त की जा सकती है, जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है।

(4) मूल्यों पर प्रभाव: सामान्यतः अप्रत्यक्ष करों से वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होती है, लेकिन अप्रत्यक्ष करों से मूल्यों में कमी लाई जा सकती है। प्रत्यक्ष करों के कारण उपभोक्ताओं की क्रय-शक्ति कम हो जाती है, जिससे मूल्यों में कमी आने लगती है।